- मरी हुई भेड़ और बकरियों को जलाकर पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए, साथ ही बाड़ों और बर्तन को शुद्ध रखना बहुत जरूरी है।

टीकाकरण–बचाव का एकमात्र कारगर उपाय

- बकरियों का टीकाकरण ही पीपीआर से बचाव का एकमात्र कारगर उपाय है।
- पीपीआर का टीका चार महीने की उम्र में दिया जाता है।
- इससे बकरियों में तीन साल के लिए प्रतिरक्षा आ जाती है।
- सभी नरों और तीन साल तक पाली हुयी बकरियों का दोबारा से टीकाकरण करना चाहिए।
- टीकाकरण करने से पूर्व भेड़ और बकरियों को कृमिनाशक दवा देना चाहिए।
- यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण हैं की टीकाकरण की अवधि के कम से कम सप्ताह बाद भेड़ बकरी को परिवहन, खराब मौसम आदि जैसे तनाव प्रदान करने वाली परिस्थितियों से मुक्त रखा जाना चाहिए।

प्रशासनिक भवन

शैक्षणिक भवन

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

डॉ. एस.एस. सिंह

निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशालय

दूरभाष : +91–789746699

ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:

कुलपति

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2023/61

बकरियों में पीपीआर (बकरी प्लेग) बीमारी

डॉ. प्रमोद कुमार सोनी

डॉ. वी.पी. सिंह

प्रसार शिक्षा निदेशालय

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

बकरियों में पीपीआर (बकरी प्लेग) बीमारी

पीपीआर (पेस्ट डेस पेटिट्स रूमिनेंट्स), विषाणु जनित पैरामाइक्सोवायरस के परिवार से जुडी एक संक्रामक व छुआछूत वाली बीमारी है। इसे बकरियों की महामारी या बकरी प्लेग भी कहा जाता है। कई अन्य घरेलू जानवर और जंगली जानवर भी इस बीमारी से संक्रमित होते हैं। पीपीआर बीमारी में मृत्यु दर आमतौर पर 50 से 80 प्रतिशत होती है, जो बहुत गंभीर मामलों में 100 प्रतिशत तक बढ़ सकती है।

पीपीआर बीमारी फैलने के कारण

- पशुओं के अत्याधिक निकट संपर्क में रहने से ये रोग फैलता है। बकरियों में भेड़ों की अपेक्षा ये रोग जल्दी फैलता है।
- पीपीआर वायरस, बीमार जानवर के आंख, नाक, लार और मल में पाया जाता है।
- बीमार ज़ानवर के छींकने और खांसने से यह हवा के माध्यम से तेजी से फैलता है।
- तनाव की स्थिति जैसे परिवहन, गर्भावस्था, परजीवीवाद अन्य बीमारी आदि के कारण भी यह रोग लग सकता है।
- भेड़ और बकरियां, पीपीआर रोग के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं।
- सभी उम्र और दोनों लिंग (नर और मादा) अतिसंवेदनशील होते हैं।
- 4 महीने से 1 साल के बीच के मेमने, बकरियों को पीपीआर रोग होने का खतरा ज्यादा होता है।

रोग के लक्षण

- इसे प्रभावित होने वाले जानवर में अल्प अवधि का तेज बुखार (104–106°F) आता है।
- मुंह के अंदर, जीभ, होंठ तालू व मसूड़ों के अंदर, खुरों के बीच तथा थनों पर छाले पड़ जाना।
- रोगी पशुओं के मुंह से अधिक पारदर्शी लार गिरती है।
- भूख कम लगना, जुगाली कम करना, अधिक प्यास, कमजोरी भी इस रोग के लक्षण हैं।
- छाले फटने के बाद घाव बन जाना।
- पैरो में घाव के कारण पशुओं का लंगड़ा कर चलना।
- दूध उत्पादन में गिरावट।
- गर्भवती पशुओं में गर्भपात की संभावना बनी रहती है।

रोग की जाँच

- पीपीआर वायरस का मुख और नाक के स्त्रावों में उचित प्रयोगशाला की जांच से, बीमारी के लक्षण आने के पहले ही पता लगाया जा सकता है।
- अतः पीपीआर के लक्षण दिखने पर लार व नाक से निकलने वाले स्त्रावों को प्रयोगशाला में जांच के लिए भिजवाना चाहिए।

रोग का उपचार

- विषाणुजनित रोग होने के कारण पीपीआर का कोई विशिष्ट उपचार नहीं है।
- हालांकि जीवाणु और परजीवियों को नियंत्रित करने वाली दवाओं का उपयोग करके मृत्यु दर को कम किया जा सकता है।
- सबसे पहले स्वस्थ बकरियों को बीमार भेड़ और बकरियों से अलग रखा जाना चाहिए ताकि रोग को नियंत्रित और फैलने से बचाया जा सके इसके बाद बीमार बकरियों का इलाज शुरू करना चाहिए।
- फेफड़ों के द्वितीयक जीवाणु संक्रमण को रोकने के लिए पशु चिकित्सक द्वारा निर्धारित एंटीबायोटिक का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- आंख, नाक और मुंह के आसपास के घावों को दिन में दो बार रुई से साफ करना चाहिए।
- इसके अलावा, मुंह के छालों को 5% बोरोग्लिसरीन से धोने से भेड़ और बकरियों को बहुत फायदा होता है।
- बीमार बकरियों को पोषक, स्वच्छ, मुलायम, नम और स्वादिष्ट चारा खिलाना चाहिए।
- पीपीआर महामारी फैलने पर तुरंत ही नजदीकी सरकारी पशु चिकित्सालय में सूचना देनी चाहिए।